एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जैविक खेती में वर्मी कंपोस्ट का योगदान

(*अमन दीक्षित, अनुराग वर्मा, स्तुति राय एवं अभिषेक राजपूत)
शोधार्थी, चंद्र भानु गुप्त कृषि महाविद्यालय, बक्शी का तालाब, लखनऊ
*संवादी लेखक का ईमेल पता: amandixit12july@gmail.com

यह केंचुआ (आइसीनिया फोटिडा) के द्वारा तैयार की गई खाद है केंचुआ भूमि में अपना महत्वपूर्ण योगदान भूमि सुधारक के रूप में करता है केंचुए अपने आहार के रूप में मिट्टी तथा कच्चे जीवाश्म को निकलकर अपनी पाचन नलिका से गुजारते हैं जिससे वह महीन कंपोस्ट में परिवर्तित हो जाता है जिसे अपने शरीर से बाहर छोटी–छोटी कॉस्टिंग्स के रूप में निकालते हैं इसी कंपोस्ट को केंचुआ खाद या वर्मी कंपोस्ट कहा जाता है या खाद मात्र 45 से 75 दिनों में तैयार हो जाती है।

केंचुआ खाद में विभिन्न तत्वों की मात्रा –

केंचुआ खाद एक उच्च पौष्टिक तत्व वाली खाद होती है जिसमें
नाइट्रोजन – 1.2–1.4
फास्फोरस – 0.4–0.6
पोटाश – 1.5–1.8 होता है।
इसके अलावा सूक्ष्म पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं।

आवश्यक सामग्री –

सूखा चारा
गोबर की खाद– 3 से 4 क्विंटल
कूड़ा एवं कचरा– 7 से 8 क्विंटल
केंचुए की संख्या– 10,000

विधि –

1. एक शेड का निर्माण करें। इस शेड के नीचे सूखे चारे की 6 इंच मोटी परत बिछाए।
2. इसके ऊपर 6 इंच पकी गोबर की खाद बिछाए और पानी से भिगोकर 2 दिन के लिए छोड़ दें।
3. 100 केंचुए प्रति वर्ग फीट की दर से इस पर समान रूप से बिछा दे।
4. अब इसके ऊपर 9 इंच मोटी कूड़े–कचरे की तह बिछा दें इसमें प्लास्टिक, कांच और लोहा इत्यादि नहीं होना चाहिए इसे बोरे से ढक दें।
5. बोरे पर पानी का छिड़काव समय–समय पर करते रहें जिससे नमी बनी रहे।
6. 1 माह बाद पूरे ढांचे को ऊपर से नीचे मिला दे फिर बोरे से ढककर पानी छिड़ककर नमी बनाएं।
7. 60 से 65 दिन में 3 से 5 क्विंटल वर्मी कंपोस्ट तैयार हो जाएगी।
8. साथ ही साथ इसमें 20 से 25 हजार केंचुए भी बढ़ जाते हैं जिसे फिर से उपयोग किया जा सकता है इस तरह 1 वर्ष में 4 से 5 बार वर्मी कंपोस्ट को बना सकते हैं।

प्रयोग विधि –

1. खेत की अंतिम जुताई में केंचुआ खाद डालकर अच्छी तरह मिला दें।
2. पौधे लगाते समय प्रत्येक गड्ढे में 30 से 35 ग्राम केंचुआ खाद डालें।
3. मिट्टी चढ़ाते समय 30 से 35 ग्राम केंचुआ खाद हर पौधे में डालें।
4. सभी फसलों में केंचुआ खाद का प्रयोग किया जा सकता है।
5. कीटनाशक एवं रासायनिक दवाओं का प्रयोग ना करें।

सावधानियां –

1. केंचुआ धूप सहन नहीं कर सकते हैं अतः खाद बनाने में छायादार स्थान का ही प्रयोग करें।
2. ताजे गोबर का प्रयोग ना करें।
3. लगभग 60 प्रतिशत नमी सदैव बनाए रखें।

केंचुआ खाद प्रयोग के लाभ –

1. केंचुआ खाद को भूमि में बिखेरने से तथा भूमि में इनकी सक्रियता से भूमि भुरभुरी तथा उपजाऊ बनती है जिससे पौधों की जड़ों के लिए उचित वातावरण बनता है इससे उनका अच्छा विकास होता है।
2. केंचुआ खाद मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की वृद्धि करता है तथा भूमि में जैविक क्रियाओं को निरंतर प्रदान करता है।
3. केंचुआ खाद में मौजूदा आवश्यक पोषक तत्व पौधे सुगमता से प्राप्त कर सकते हैं।
4. केंचुआ खाद के प्रयोग से मिट्टी भुरभुरी हो जाती है जिससे उसमें पोषक तत्व व जल संरक्षण क्षमता बढ़ जाती है और हवा का आवागमन भी मिट्टी में ठीक रहता है।
5. केंचुआ खाद कूड़ा करकट, गोबर व फसल अवशेषों से तैयार की जाती है अतः गंदगी में कमी होती है तथा पर्यावरण को सुरक्षित रखती हैं।
6. केंचुआ खाद टिकाऊ खेती के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है तथा यह जैविक खेती की दिशा में एक नया कदम है।